शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शरद जोशी के व्यंग्य निबंधों में राजनीति और प्रशासन

निशी राघव (शोधार्थी)
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

व्यंग्य आज के समय के सबसे महत्त्वपूर्ण विधा है क्योंकि इसका जन्म अपने समय की विद्रूपताओं के भीतर से उपजे असंतोष से होता है। दरअसल व्यंग्य एक माध्यम है, जिसके द्वारा व्यंग्यकार जीवन की विसंगतियों, खोखलेपन और पाखण्ड को समाज के सामने उजागर करता है। जिनसे हम सब परिचित तो होते हैं, किन्तु उन स्थितियों को दूर करने व बदलने की कोशिश नहीं करते बल्कि उन्हीं विद्रूपताओं विसंगतियों के बीच जीने की, उनसे समझौता करने की आदत बना लेते हैं। व्यंग्यकार व्यंग्य के माध्यम से ऐसे पात्रों और स्थितियों की योजना करता है और इन अवांछित स्थितियों के प्रति पाठकों को सचेत करता है। ख्यात व्यंग्यकार शरद जोशी ने अपने व्यंग्य निबंधों में राजनीति और प्रशासन का कच्चा चिट्ठा खोल दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसीका विश्लेषण किया गया है।

भूमिका

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का प्रयोग किसी न किसी रूप में होता रहा है। मध्यकाल में संत कबीर ने सामाजिक विसंगतियों के विरूद्ध कटु व्यंग्यात्मक प्रहार किए। इसके पश्चात् आधुनिक काल में जब अन्यान्य साहित्यिक विधाएँ जन्म ले रही थीं, तब व्यंग्य का उन्मेष भी हुआ। इस युग में भारतीय जनमानस में एक नई चेतना विकसित हो रही थी। रीतिकालीन सामंती वातावरण लुप्त हो चला था। फलस्वरूप परम्परागत विषयों की अपेक्षा समाजोन्मुखी व जनवादी साहित्य का विकास हो रहा था। इनमें सामाजिक परिवर्तन व पराधीनता से मुक्ति की कामना का भाव प्रबल रूप में विद्यमान था। इस युग के अधिकांश साहित्यकार पत्रकार भी थे, जो जनजीवन में सामाजिक व राजनीतिक विसंगतियों के विरूद्ध चेतना विकसित करना चाहते थे। फलस्वरूप उन्होंने व्यंग्य को भी एक हथियार के रूप में अपनाया। भारतेन्दु के साथ बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चैधरी 'प्रेमघन' इस युग के प्रमुख व्यंग्यकार हैं। भारतेन्दु के पश्चात् व्यंग्य की परम्परा छायावाद में निराला, प्रगतिवाद में नार्गाजुन से होती हुई स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में अधिक मुखरित हुई। सन् 1947 में हमारा देश आजाद हुआ और देश की आजादी के साथ ही आम आदमी खुशहाली के सपने देखने लगा, किन्तु विपरीत परिस्थितियों और राजनीतिक अदूरदर्शिता के कारण आम आदमी के ये सपने पूरे नहीं हो सके। बल्कि समाज, राजनीति, धर्म, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में असंगतियाँ बढीं। सामाजिक व नैतिक मूल्यों का पतन हुआ। आजादी पूर्व देखे गए स्वप्न तो बीसवीं शताब्दी के छठे दशक तक आते-आते ही खण्डित हो गए। इस प्रकार गुलाम भारत में होने वाले शोषण व अत्याचार आजादी के बाद कम होने के बजाय और अधिक बढ़ गए।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्वातंत्र्योत्तर काल की यही विसंगतियाँ और जटिलताएँ व्यंग्य के लिए आधार भूमि बनी।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का पर्याप्त सृजन हुआ। इस युग में व्यंग्यकारों की लम्बी परम्परा विकसित हुई, जिनमें हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल, रवीन्द्रनाथ त्यागी व नरेन्द्र कोहली, जैसे प्रमुख व्यंग्यकार शामिल हैं। इनके अतिरिक्त प्रेम जनमेजय, बरसानेलाल चतुर्वेदी, शंकर पुणताम्बेकर, बालेन्दु शेखर, सूर्यबाला और गोपाल चतुर्वेदी जैसे व्यंग्यकार भी हैं, जो आज की विसंगतियों पर कटु प्रहार कर व्यंग्य विधा को समृद्धि प्रदान कर रहे हैं।

शरद जोशी और व्यंग्य साहित्य

साहित्य में व्यंग्य परम्परा को सार्थक पहचान देने का कार्य जिन व्यंग्यकारों ने किया उनमें शरद जोशी जी का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों पर चोट कर के उनमें बदलाव लाने का प्रयास किया। व्यंग्य एक गद्यात्मक विधा है, किन्तु शरद जोशी की यह विशिष्टता है कि उन्होंने उसे कविता की तरह पढ़कर कवि सम्मेलनों में मंच लूटने की महारथ हासिल की। जादू की सरकार में वे लिखते हैं कि ''लेखन मेरे लिए जीने की तरकीब है। इतना लिख लेने के बाद अपने लिखे को देख मैं सिर्फ यह पाता हूँ कि चलो, इतने बरस जी लिया। यह न होता तो इसका क्या विकल्प होता अब सोचना कठिन है। लिखना मेरा निजी उद्देश्य है।'' युग की विसंगतियाँ ही हैं, जिन्होंने उन्हें व्यंग्य लेखन के लिए प्रेरित किया। जोशी जी अपने चिंतन और लेखन के स्तर पर व्यापक मानवीय सरोकारों के साथ संवेदनशीलता और बौद्धिक सघनता से जुड़े हैं। उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं पर गंभीरता से लिखा है। 'नईदुनिया' समाचार पत्र से उन्होंने लेखन की शुरूआत की। सन् 1980 में उन्होंने हिन्दी एक्सप्रेस के सम्पादन का दायित्व संभाला, किन्तु नवभारत टाइम्स के दैनिक व्यंग्यों के माध्यम से वे देश भर में चर्चित हो गए। वे अनेक पत्र-पत्रिकाओं के स्तम्भ लेखक भी रहे हैं। रोजमर्रा के विषयों में उनकी प्रतिक्रिया इतनी सटीक है कि पाठक सोचने पर विवश हो जाता है कि लेखक ने कितनी सूक्ष्म दृष्टि से आम मुद्दों पर गहराई से चिंतन किया है। शरद जोशी ने लगभग 500 से अधिक व्यंग्य लिखे जो लगभग 18 संग्रहों में संगृहीत हैं। इनमें मुख्य हैं - रहा किनारे बैठ, नावक के तीर, परिक्रमा, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, किसी बहाने, जादू की सरकार आदि। शरद जोशी ने दो लोकप्रिय नाटक भी लिखे 'एक था गधा उर्फ़ अल्ला दाद खां' और 'अंधों का हाथी।'

समकालीन जीवन और समाज की तमाम समस्याओं और विसंगतियों में एक सिद्धहस्त व्यंग्यकार की तरह बहुत कुछ तोड़ने और बनाने की भीतरी छटपटाहट भी उनके व्यंग्यात्मक निबंधों में देखी जा सकती है। जोशी जी ने सर्वाधिक व्यंग्य लेखन राजनीतिक भ्रष्टाचार व राजनेताओं के सफेदपोश चरित्र पर लिखे हैं। भ्रष्टाचार आज भारतीय राजनीति की पहचान बन चुका है। भ्रष्टाचार की व्यापकता पर वे लिखते हैं-"सारे संसार की मसि (स्याही) करे और सारी जमीन का कागज फिर भी भ्रष्टाचार का भारतीय महाकाव्य अलिखित ही रहेगा।" 'जीप पर सवार इल्लियाँ(1971)', 'दूसरी सतह (1978)' आदि व्यंग्य इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। शरद जोशी ने दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले धारावाहिक 'दाने अनार के', 'ये जो है जिन्दगी' के संवाद भी लिखे।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शरद जोशी एक सजग, गंभीर व निर्भीक व्यंग्यकार रहे हैं, जिन्होंने बार-बार सामाजिक, राजनैतिक विसंगतियों को उजागर कर सत्य को उद्घाटित किया है। उन्होंने सन् 1950 से लेकर 1990 के काल में व्यंग्य का विपुल लेखन किया अखबारी भी, साहित्यिक भी। उनके साहित्यिक व्यंग्य आज हिन्दी साहित्य की अनुपम धरोहर हैं।

वर्तमान युग में राजनीति आज के सामाजिक जीवन का सबसे बड़ा सत्य है। भारत में जनतंत्रात्मक शासन होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता है। वह अपने भाव-विचारों को साहित्य, चित्रकला, नृत्य, संगीत, वास्तुकला आदि के माध्यम से व्यक्त कर सकता है। विचार स्वातंत्र्य होने के कारण व्यंग्य की जड़ें भी मजबूत हुई तथा व्यंग्य के क्षेत्र का विचार भी हुआ। रामराज्य की कल्पना साकार न होने तथा राजनेताओं की कुर्सी-लोलुपता के कारण व्यंग्य का सबसे अधिक शिकार राजनेताओं तथा राजनीतिज्ञों को ही बनना पड़ा है। व्यंग्यकारों ने इनके क्रिया-कलापों में पायी जाने वाली असंगतियों का पर्दाफाश किया ओर व्यंग्य के माध्यम से जनता में आक्रोश भी पैदा किया, क्योंकि आज के नेताओं को जनता से कोई लेना-देना नहीं है। उनका तो केवल अपना स्वार्थ पूरा होना चाहिए।

डॉ. शेरजंग गर्ग का कथन विचारणीय है - "राष्ट्रीय राजनीति के अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की विसंगतियों तथा कृत्रिम शान्ति प्रयत्न, गोरों द्वारा कालों पर किए जा रहे अत्याचार, बड़े देशों द्वारा छोटे-छोटे नव-विकसित राष्ट्रों को आतंकित करने की कोशिश, निरपराध बच्चों युवकों-युवतियों द्वारा भोगी जाने वाली युद्ध की विभीषिका और शक्ति-परीक्षण के फेर में लाखों की मृत्यु आदि विभाजन दारूण स्थितियों में कवियों की संवेदना को झकझोरा।"[1]

व्यंग्य कर्म को विदूषकों या मसखरों के मजाक के स्तर से ऊपर उठाकर सामाजिक उत्तरदायित्व का जामा पहनाने वाले व्यंग्यकारों में शरद जोशी का नाम प्रथम स्थान पर है तथा प्रतिबद्धता के नाम पर किसी वाद या खेमे से न जुड़े हुए यत्र-यत्र विकृतिस्तत्र तत्र व्यंग्यम् के सिद्धान्त को मानने वाले और आम पाठक तक पंहुचने में ही व्यंग्य की, बल्कि सारे साहित्य की अर्थवत्ता समझने वाले इस व्यंग्यकार ने हिन्दी साहित्य को व्यंग्य के कई नये आयाम दिये हैं। शरद जोशी जीवन और व्यंग्य में 'सैंस ऑफ़ ह्यूमर' को स्वीकारने योग्य चीज मानते हैं। जो हास-परिहास को परहेज की चीज समझते हैं, शरद जोशी उनसे परहेज करते हैं। उनकी दृष्टि में यह एक आडम्बर है। साहित्य की प्रतिष्ठा न तो हास-परिहास से कम होती है, न जनसामान्य में लोकप्रिय होने से वे लिखते हैं "व्यंग्यकारों को यह कहते शर्म महसूस नहीं होती कि एक बड़े पाठक वर्ग द्वारा पढ़े और सराहे गये हैं। यही हमारी कोशिश थी, जिसमें हम सफल रहे।"[2]

शरद जोशी रचनाओं की स्वायत्तता के भी आग्रही नहीं हैं। वे कहते हैं "क्षण भंगुर रचनाओं का अंबार खड़ा करने का चरित्र साहस है व्यंग्यकारों में। अमरता का लोभ इन्हें नहीं डिगा पता। साहित्य और जिन्दगी की हमारी परिभाषाएं भिन्न हैं। आपकी आपको मुबारक। हमारा ज्यादा नाता जिन्दगी से है।"[3]

शरद जोशी का व्यंग्य फलक इतना व्यापक है कि उसमें कीड़ी से कुंजर सब कुछ समा गया है। जोशी जी सदैव वर्तमान शासन की कमजोरी का पर्दाफाश करते रहे, फिर चाहे कांग्रेस हो चाहे

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भाजपा या फिर जनता दल हो। उनकी मान्यता थी कि अनैतिक आचरणों की कलई उतरना, उनकी चमक-दमक को फीका करना ही व्यंग्य की नैतिकता है। जिसे वे अपने लेखन के द्वारा राजनीतिक पक्ष पर अपनाते हुए नजर आते हैं।

शरद जोशी के व्यंग्य में राजनीति और प्रशासन

राजनीति का केन्द्र बिन्दु वे बहुरूपिये नेता हैं जिनके चरित्र पर जितना अधिक लिखा गया है उससे कहीं अधिक और लिखा जा सकता है। जन सेवा का मुखौटा पहने जनता के दुःख-दर्द पर मगरमच्छ के आँसू बहाने वाले इन नेताओं के लिये बगुले का उपमान सर्वदा उपयुक्त है। 'भैंसन्हि माँह रहत नित बगुला' व्यंग्य में इनकी वक वृत्ति का सूक्ष्म अंकन किया है। वे लिखते है "जहां तक राजनीति का सवाल है, परम पद तो प्रायः बगुलों को ही प्राप्त होते हैं जो ऊपर से सफेद और अन्दर से घाघ और स्वार्थी होते हैं, राजनीति में उन्हें कोल और असामाजिक धन्धों के कीचड़ में फंसे लोग नेता को अतिरिक्त आदर देते हैं।"[4]

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ और 26 जनवरी 1950 को गणतंत्रात्मक देश घोषित किया गया। गणतंत्रात्मक शासन होने के कारण प्रति पांच वर्ष उपरान्त केन्द्र व राज्य सरकार बनाने हेतु आम चुनाव कराए जाते हैं। राजनीतिक क्षेत्र में बहुत गहराई तक भ्रष्टाचार व्याप्त है। जोशी जी ने वोटर के बिकने की प्रवृति पर तीखा प्रहार किया है। नगरपालिका जैसे लघु स्तर के लिये भी जब वोट खरीदे जाते हैं या शराब आदि पिलाकर उन्हें अपने पक्ष में किया जाता है तो फिर अन्य बड़े चुनावों का तो कहना ही क्या ? और मतदाता भी इतना चतुर हो गया है कि माल किसी का खाता है और वोट किसी ओर को देता है। मतदाताओं के मत केवल शराब व नोट से ही नहीं खरीदे जाते, वरन् अन्य प्रलोभनों से भी खरीदे जाते हैं। जैसे चुनाव के दौरान गरीबों को रजाई, कम्बल, साड़ी आदि व बेरोजगारों को नौकरी आदि का लालच देकर वोट के लिये अनुकूल वातावरण तैयार किया जाता है। इस युक्ति पर जोशी जी 'चुनाव गीतिका सरलार्थ' की अठारहवीं गीतिका में लिखते हैं, "अब यह अपनी क्रीड़ा भूमि को छोड़ रहा है। वह चुनाव जीत गया है। और व्यर्थ में मोहों से उसने मुक्ति प्राप्त कर ली है। उसने जनता से किये अपने वायदे कहीं गंदी नालियों में फेंक दिये हैं। अपने नारों की स्मृति मात्र से वह ऊब जाता है। अब अपने पोस्टरों की ओर वह हंसकर उपेक्षा से अवलोकता है। उसके घोषणा पत्र मार्ग में बिखरे हुए हैं जिन्हें रौंदता हुआ वह राजधानी लौट रहा है।"[5]

'चुनाव : एक मुर्गा बीती' एक गूढ़ व्यंग्यकारी प्रतीकात्मक कथा है। एक मुर्गा पोस्टर पर अपना चित्र देखता है, जिसके नीचे लिखा था,... को वोट दें। वह जानता था कि यह वोट क्या होता है, परन्तु उसे अनजाना-सा डर लगने लगता है। वोट के दिन की आतंक के साथ प्रतीक्षा करता है। चुनाव बीत जाता है किन्तु उसी शाम चुनाव जीतने की आशा में बेचारे मुर्गे को पकाकर खा लिया जाता है।

जोशी जी लिखते हैं "तभी वह भोंड़ी शक्ल-सूरत वाला खानसामा आया और मुर्गी को टांगों से पकड़ कर उल्टा लटकाकर जागीरदार साहब के पिछवाड़े की ओर ले गया। मुर्गी पीछे भागी। मुर्गा चिल्लाया - क्या यही वोट है ? क्या कर रहे हैं क्या कर रहे हैं ?

किसी ने नहीं सुना। रात तक उसका मसालेदार इलेक्शन कर दिया और सजाकर प्लेटों में रख दिया गया।"[6]

वस्तुतः हमारी सारी प्रजातांत्रिक व्यवस्था में मतदाता क्या है ? एक मुर्गा। उसका अतिरिक्त दुर्भाग्य यह है कि उसे पांच साल बाद बलि होकर विजयी उम्मीदवार की प्लेट में सजना पड़ता है, पांच साल तक चूस-चूस कर खाया जाने के लिये।

भ्रष्टाचार विपन्न जीवन का ऐसा कलंक है जिससे तंग आकर सामान्य व्यक्ति अनैतिक आचरण करने के लिये विवश हो जाता है। आज शासक, प्रशासक, मंत्री, सांसद, वोटर सभी भ्रष्ट तरीकों का प्रयोग करते हैं। राजनीतिक वातारण दिन-प्रतिदिन प्रदूषित होता जा रहा है। नेता (मंत्री) के लिये किसी प्रकार की शिक्षा की जरूरत नहीं पड़ती। उनके लिये बस आवश्यक है "भाषणबाजी और जोड-तोड़ में पारंगत होना। 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' की तर्ज पर नेता भी अपने अनुयायियों और समर्थकों से कहता है - हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे। भ्रष्टाचार खूब फल फूल रहा है।

"कितनी डाल, कितने पत्ते, कितने फूल, और लुक-छिपकर आती कैसी मदमाती सुगन्ध यह मिट्टी बड़ी उर्वरा है। शस्य श्यामला काले कारनामों के लिये दफ्तर-दफ्तर नर्सरियां हैं और बड़े बाग, जिनके निगाहबान बाबू सुपरिन्टेण्डेन्ट, डायरेक्टर, सचिव, मंत्री।... आजादी के आंदोलन में जेल जाने वाले, चरखे के कतैया, गांधी के चेले, बयालीस के जुलूस वीर, मुल्क का झण्डा अपने हाथ में ऊपर चढ़ाने वाले जनता को अपने, भारत मां के लाल, लाल अंग्रेजन के कैसा खा रहे हैं रिश्वत गपगप। ठाठ हो गये सुसरी आजादी मिलने के बाद।"[7]

"भ्रष्टाचार एक अक्षय कलश है, एक कभी न रीतने वाली रूपयों की थैली। इसीलिए सरकार का जादू का जादूगर कहता है। "ये करप्शन की, भ्रष्टाचार की थैली है भाई साहब इसका रूपया कभी खत्म नहीं होगा।"[8]

भ्रष्टाचार में हम बुद्धिजीवी और साहित्यकार भी तो लिप्त हैं। हम भाषण देने या कांफ्रेंस में भाग लेने जाते हैं। फर्स्ट क्लास का किराया लेते हैं और दूसरे दर्जे में धक्का-मुक्की के बीच यात्रा करते हैं। शरद जोशी इसे 'एक मिनी भ्रष्टाचार' कहते हैं। अपने इसी लेख में जोशी जी लिखते है "मैं कहता हूँ चाहे यह भ्रष्टाचार हो, पर है भ्रष्टाचार। मुझमें उनमें क्या अंतर है। उनको बड़े मौके मिले, उन्होंने बड़ा भ्रष्टाचार किया। मुझे एक छोटा मौका मिला, मैंने छोटा भ्रष्टाचार किया।"[9]

जोशी जी ने देश में चल रहे इस राजनीतिक दुश्चक्र पर प्रहार किया है। देश की समस्या पर तमाम आयोजन होते हैं, आयोग गठित किए जाते हैं, परन्तु समस्याएं यथावत बनी रहती हैं। चुनाव का समय होते यही समस्याएं चुनाव जीतने का प्रमुख मुद्दा बन जाती हैं। 'एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ' - नाटक प्रतीकात्मक रूप में विकृत व्यवस्था पर व्यंग्य है। जोशी जी ने अलादाद नामक गधे को नाटक का नायक बनाया। नवाब अपनी हूकुमत बनाये रखने के लिये हर कार्य करने के लिये तैयार रहता है। अपनी छवि को संवारने के लिए झूठे प्रचार पर चाटुकारों का भी सहारा लेता है। नवाब तानाशाह का आम आदमी को बेवकूफ बनाना राजनीति का मूलमंत्र है जो राजनीति का अंग बन गया है।

चुनावों के समय नेता सर्वत्र भ्रमण करते हैं। मतदाताओं के आगे हाथ भी जोड़ते हैं उन्हें खिला पिलाकर खुश करते हैं, ताकि वोट उन्हें मिल

सके। वे ऐसे-ऐसे स्थानों पर जाकर भी अपनी सभाओं का आयोजन करते हैं या पैदल दौरा करते हैं जहां सामान्यत: दो मिनट खड़ा रहना भी उन्हें स्वीकार नहीं होता। चुनाव के बाद वस्तुओं की कीमतें बढ़ती हैं। मंहगाई अपने चरम स्तर पर है। गरीबों के परिवारों का गुजारा नहीं हो पा रहा है।

चुनाव केन्द्रित राजनीति में हर घटना या दुर्घटना को वोट मजबूत करने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। इस बार भी ऐसा ही हुआ। इल्लियों का मामला दिल्ली तक जा पंहुचा, त्वरित कार्यवाहियां शुरू हुई हवाई जहाजों और हेलीकॉप्टर से दवाईंया छिड़की गयी।

"फसल बची नहीं, क्या मालूम पर वोट मजबूत हुए।

"इस खेत में तो इल्लियाँ नहीं हैं। बड़े अफसर ने पूछा।

जी नहीं है छोटा अफसर बोला।

कुछ तो नजर आ रही हैं।

जी हाँ, कुछ तो हैं।

कुछ तो हमेशा रहती हैं।

खास नुकसान नहीं करती।

फिर भी खतरा है।

'खतरा तो है।

कभी भी बढ़ सकती है।

जी हाँ, बढ़ सकती हैं।

सुना है सारा खेत साफ कर देती हैं।

बिल्कुल साफ कर देती हैं।

इस खेत पर छिड़काव हो जाना चाहिए।

जी हाँ, हो जाना चाहिए"[10]

यह व्यंग्य कृषि और कृषक की समस्याओं के प्रति सारे बुद्धिजीवी वर्ग की अनभिज्ञता और उदासीनता को भी सहज रूप से उद्घटित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर घटी घटनाएं भी शरद जोशी के साहित्य में देखने को मिलती हैं। जोशीजी ने राजनीतिक क्षेत्र में घटने वाली विदेशी घटनाओं को भी चुना है। जोशी जी कहते हैं कि कभी राष्ट्रीय विकास की बात चलती है तो घूम-फिरकर विदेशी सहायता पर आकर ठहर जाती है। 'सरकार का जादू' में शरद जोशी एक आयटम का वर्णन करते हुए कहते हैं "ये फारेन एड विदेश की मदद का कटोरा है, साहबान। वह कटोरा लड़की को देता है और बोलता है, अमेरिका का वास्ते। फिर एक और फ्रांस का वास्ते और इसी तरह देशों का नाम लेता जाता है और विदेश नीति के उस छोटे से खाली डिब्बे से सहायता के लिये कटोरे निकलते जाते है।"[11]

राजनेताओं के क्रिया-व्यापार हिन्दी व्यंग्य यात्रा का आधार बने। नेता का नाम ही व्यंग्य का पर्याय बन गया। स्वाधीनता भारत के आम नागरिक के टूटते बिखरते वचनों की। राजनीति ठगों की निर्लज्ज लूट ने आम भारतीय नागरिकों के मन को कैसे तोड़ दिया और उसकी क्या प्रतिक्रिया हुई जनता के मानस में क्या बिम्ब है। उनके जोशी जी ने जीवंत चित्र प्रस्तुत किए हैं। व्यंग्य में प्रतीकों का प्रयोग भी अत्यन्त कुशलता के साथ किया जाता है। शरद जोशी के प्रतीक व्यंग्यकता की दृष्टि से बड़े सार्थक हैं। 'जीप पर सवार इल्लियां' में भ्रष्टाचारी अफसरों के लिये इल्लियां कितना सही प्रतीक हैं। इसी तरह भैंस बगुलों को पीठ पर बैठा लेती है यह दोहरी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति बगुले के सनातन चरित्र को अभिनव अर्थ प्रदान करती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: कहा जा सकता है शरद जोशी के मतानुसार वर्तमान जीवन में सबसे अधिक प्रभाव डालने वाला तत्व है राजनीति और इसी राजनीति

को प्रभावित करते हैं - राजनीतिज्ञ और नेता। इन राजनीतिज्ञों के क्रियाकलापों, छल-छद्म से इतने भरे हुए हैं कि इनकी बात पर विश्वास करना अंसभव हो गया है। धोखा, फरेब, जालसाजी, खोखले बयान, झूठे वायदे और अवसरवादी राजनीति इनकी पहचान बन गयी है। जोशी जी ने ऐसे राजनेताओं को निशाना बनाकर आक्रोश क्षोभ में प्रयुक्त जलती हुई शब्दावालियों का प्रयोग किया है। जोशी जी के अनुसार प्रजातंत्र की सबसे अच्छी परिभाषा जनता का जनता द्वारा जनता के लिये राज दिया जाता है। आधुनिक परिवेश में यह आदर्श वाक्य बन गया है। इसमें सब कुछ जनता का होते हुए कुछ भी नहीं है, सिर्फ जनता के प्रतिनिधि का बन गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि शरद जोशी ने देश के नेताओं, मंत्रियों और अन्य राजनीतिक प्रतिनिधियों के भ्रष्ट खोखले स्वार्थी और अवसरवादी प्रवृतियों पर व्यंग्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, शेरजंग गर्ग, पृष्ठ 149
2 मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, शरद जोशी, पृष्ठ 9
3 मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृष्ठ 11
4 यथा सम्भव शरद जोशी, पृष्ठ 17
5 यथा सम्भव शरद जोशी, पृष्ठ 390
6 मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, शरद जोशी, पृष्ठ 114
7 मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, शरद जोशी, पृष्ठ 122
8 यथा सम्भव शरद जोशी, पृष्ठ 37
9 यथा सम्भव शरद जोशी, पृष्ठ 133
10 मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, शरद जोशी, पृष्ठ 109
11 यथा सम्भव शरद जोशी, पृष्ठ 38-39